हिमाचल प्रदेश दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में

माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के अभिभाषण का प्रारूप

दिनांक 17 अप्रैल 2024, बुधवार	**समय : 11.00 AM**	**स्थान : राजभवन, गुवाहाटी**

आप सभी को मेरा नमस्कार,

आज हम यहां “एक भारत श्रेष्ठ भारत” के अंतर्गत हिमाचल प्रदेश दिवस मनाने के लिए एकत्रित हुए हैं। इस कार्यक्रम में, मैं आप सभी का स्वागत एवं अभिनन्दन करता हूं।

हिमाचल प्रदेश हिमालय की गोद में बसा एक बहुत ही सुन्दर राज्य है। 15 अप्रैल हिमाचल प्रदेश के गठन का प्रतीक है इसलिए हर साल 15 अप्रैल को "हिमाचल दिवस" के रूप में मनाया जाता है। कुछ कारणों से हम 15 अप्रैल के बजाय आज "हिमाचल दिवस" मना रहे हैं। मैं इस अवसर पर आप सभी को 77वें हिमाचल दिवस की हार्दिक बधाई देता हूं।

वैसे तो हिमाचल प्रदेश का इतिहास उतना ही प्राचीन है, जितना कि मानव अस्तित्व का अपना इतिहास है। प्राचीन काल में इस प्रदेश के आदि निवासी 'दास', 'दस्यु' और 'निषाद' के नाम से जाने जाते थे। सन 1857 तक यह प्रदेश महाराजा रणजीत सिंह के शासन के अधीन पंजाब राज्य का हिस्सा था। जब अंग्रेज़ यहां आए, तो उन्होंने गोरखा लोगों को पराजित करके कुछ राजाओं की रियासतों को अपने साम्राज्य में मिला लिया।

देश की आजादी के बाद राजा जोगेंद्र सेन की अगुवाई में 30 रियासतों का विलय हुआ और 15 अप्रैल 1948 को हिमाचल प्रदेश का गठन हुआ। 26 जनवरी 1950 को भारत गणराज्य बना और हिमाचल प्रदेश को केंद्र शाषित प्रदेश बनाया गया।

18 दिसंबर 1970 को संसद में हिमाचल प्रदेश राज्य अधिनियम पारित हुआ और 25 जनवरी 1971 को हिमाचल प्रदेश को राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ।

हिमाचल प्रदेश के गठन से लेकर पूर्ण राज्य का दर्जा दिलाने में एक पहाड़ी सपूत का महत्वपूर्ण योगदान रहा, वे थे डॉ. यशवंत सिंह परमार। उन्हें हिमाचल प्रदेश का निर्माता कहा जाता है। डॉ. परमार ऐसी शख्सीयत थे, जिन्होंने प्रदेश का इतिहास ही नहीं भूगोल भी बदल कर रख दिया था। उन्होंने कांगड़ा और पंजाब के कुछ पहाड़ी क्षेत्रों को हिमाचल प्रदेश में शामिल करवाकर प्रदेश की सीमाओं को और बड़ा कर दिया।

डॉ. परमार ने हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा दिलाने के लिए केंद्र के सामने जोर-शोर से अपनी मांग रखी थी। वे तब तक पीछे नहीं हटे, जब तक हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा नहीं मिल गया।

हिमाचल की राजनीति के पुरोधा व प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. परमार पहाड़ और पहाड़ी लोगों के हितों के लिए भी हमेशा संजीदगी के साथ सक्रिय रहे। उनके कुशल नेतृत्व, दूरदर्शी सोच और सूब-बूझ से हिमाचल विकास की सरपट पटरी पर दौड़ता चला गया।

अस्तित्व में आने से लेकर आज तक हिमाचल प्रदेश विकास की राह पर लगातार अग्रसर है। हर क्षेत्र में शून्य से शुरुआत करने वाले इस छोटे से पहाड़ी राज्य ने 76 सालों में कई बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं।

1948 में हिमाचल प्रदेश में साक्षरता दर सात फीसदी थी, जो कि आज 76 साल बाद 82.80 फीसदी तक पहुंच चुकी है। प्रदेश में तीन एयरपोर्ट हैं, जिनकी 1948 में संख्या शून्य थी।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी प्रदेश ने अग्रणी मुकाम हासिल किया है। हिमाचल में अब एक एम्स, एक सेटेलाइट पीजीआई सहित पांच मेडिकल कॉलेज, पांच डेंटल कॉलेज, कई नर्सिंग और फार्मेसी कॉलेज हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में हिमाचल के पास एक ट्रिपल आईटी, एक आईआईटी, तीन स्वायत इंजीनियरिंग संस्थान और दर्जनों इंजीनियरिंग कॉलेज हैं। यहां पर प्रदेश ही नहीं, बल्कि देश के दूसरे राज्यों के छात्र शिक्षा ग्रहण करने आते हैं।

मित्रो,

हिमाचल प्रदेश की प्राकृतिक सुंदरता और समृद्ध संस्कृति यहां की धरोहर और पहचान है। हिमाचल प्रदेश की प्राचीन सुंदरता केवल दृश्यों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसकी समृद्ध और जीवंत संस्कृति में भी देखा जा सकता है। प्रदेश के लोग अपनी संस्कृति और रीति-रिवाजों का बहुत सम्मान करते हैं और इसे गर्व के साथ अपनाते हैं।

हिमाचल प्रदेश की कला और हस्तकला ज्वलंत, विविध और उत्तम हैं। शिल्प कौशल के लिए प्रसिद्ध, राज्य की कला संस्कृति को जटिल चित्रों, उत्तम हथकरघा, विस्तृत लकड़ी के काम, अद्वितीय धातु उत्पादों, बुने हुए कालीनों, पत्थर के काम, चमड़े के सामान और बहुत कुछ देखा जा सकता है। हिमाचली टोपियां, रेशम और मलमल के 'चंबा रुमाल', 'क्लासिक शंका' हिमाचल की सबसे सुंदर और आकर्षक स्मृति चिन्ह हैं। पहाड़ी पेंटिंग्स राज्य के अद्वितीय वनस्पतियों और जीवों का प्रदर्शन हैं।

हथकरघा उत्पाद जैसे शॉल, कंबल, कालीन आदि तिब्बती पैटर्न से काफी प्रभावित हैं। टोकरी बुनाई हिमाचल का एक अन्य सामान्य शिल्प है, जिसे राज्य के बुनकरों द्वारा बड़े पैमाने पर डिजाइन किया गया है। प्रकृति ने हिमाचल प्रदेश को प्रचूर मात्रा में प्राकृतिक संसाधन प्रदान किए हैं और प्रसन्नता की बात है कि प्रदेश के लोगों ने इसकी भव्यता को बनाए रखा है।

नृत्य और संगीत के क्षेत्र में भी हिमाचल प्रदेश अपनी विशिष्ट पहचान है। किन्नौर में 'लोसर शोना चुकसाम', सिरमौर में 'बुराह नृत्य', लाहौल और स्पीति में 'शुंटो', कुल्लू में 'नाटी', चंबा में 'दांगी' प्रदेश के कुछ लोकप्रिय नृत्य रूप हैं। यहां के लोकगीत धर्म, रीति-रिवाजों और फसल से जुड़े हुए हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि राज्य सरकार के प्रयास से राज्य की प्रामाणिक कला संस्कृति अच्छी तरह से संरक्षित है। यहां के नृत्य और संगीत हमेशा से ही पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रहे हैं।

मित्रो,

हिमाचल प्रदेश अपने खूबसूरत मंदिरों और तीर्थस्थलों के लिए प्रसिद्ध है। इनमें से कई बर्फ से ढके पहाड़ों और हरे-भरे जंगलों से घिरे सुंदर स्थानों पर स्थित हैं। प्रदेश में पांच शक्तिपीठ हैं, जो कि मां चामुंडा देवी, मां चिंतपूर्णी देवी, मां बज्रेश्वरी देवी, मां नैना देवी और मां ज्वाला जी के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनमें से प्रत्येक का एक अनूठा इतिहास और महत्व है। इसके अलावा बैजनाथ मंदिर, लक्ष्मी नारायाण मंदिर, हिडिम्बा मंदिर, भीमकाली मंदिर, शंगचूल महादेव मंदिर आदि भी दर्शनीय धार्मिक स्थल हैं, जहां लाखों की संख्या में लोग भगवान के दर्शन और पूजा करने के लिए आते हैं।

माना जाता है कि हिमाचल प्रदेश का हिन्दू पौराणिक कथाओं और धर्म के साथ मजबूत संबंध है। कई पुराणों और धार्मिक ग्रंथों में हिमालय को भगवान शिव की आसन स्थली और देवताओं का निवास क्षेत्र माना गया है। इसलिए इसे 'देवभूमि' भी कहा जाता है।

हिमाचल प्रदेश सबसे कम भ्रष्ट राज्यों में से एक है, जो तकनीकी प्रगति के कारण तेजी से बदल गया और सबसे अच्छे पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हुआ। विविध प्राकृतिक विशेषताओं, संस्कृतियों और रीति-रिवाजों के कारण हिमाचल प्रदेश का प्रत्येक क्षेत्र पर्यटकों को आकर्षित करता है। देश-विदेश से भारी संख्या में पर्यटक यहां ट्रेकिंग और पैरा ग्लाइडिंग का आनन्द लेने के लिए भी आते हैं।

हिमाचल प्रदेश के लोग समझदार, विनम्र स्वभाव वाले और साहसी भी होते हैं। हिमाचली लोगों के साहसिक होने का प्रमाण कारगिल युद्ध में मिलता है। कारगिल युद्ध जीतने में हिमाचल के सपूतों का बड़ा योगदान रहा है। कारगिल में 52 हिमाचली जवानों ने देश पर प्राण न्योछावर किए थे। कारगिल युद्ध में शौर्य गाथा लिखने वाले हिमाचल के वीरों में मेजर विक्रम बत्रा और राइफलमैन संजय कुमार को मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

इस परिपेक्ष्य में मैं पहले परम वीर चक्र पाने वाले वीर जवान मेजर सोम नाथ शर्मा का नाम भी सम्मान के साथ लेना चाहूंगा, जिन्होंने 1947 में श्रीनगर के बडगांव में कबिलाई घुसपैठियों और उनके भेष में आए पाकिस्तानी सेना के जवानों को नाको तले चने चबवा दिए थे।

हाथ में प्लास्टर के बावजूद मेजर सोमनाथ और उनके रेजीमेंट के जवानों ने बहादुरी से लड़ते हुए शहीद हो गए, लेकिन दुश्मनों के श्रीनगर एयर बेस पर कब्जा करने के मंसूबों को पूरा होने नहीं दिया।

कारगिल युद्ध हो या पाकिस्तान व चीन के साथ हुए युद्धों की बात, हिमाचल के सपूतों ने हमेशा अदम्य साहस का परिचय देकर शहादत प्राप्त की है। उनकी शहादत आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत है। हमारा देश इन वीर जवानों का सदैव ऋणि रहेगा।

मित्रो,

एक फौजी चाहे किसी भी राज्य या क्षेत्र का हो, वह देश की रक्षा के लिए जी-जान लगाता है। उसमें एकता, देशभक्ति और राष्ट्रीयता की भावना होती है। इसी भावना को देश के जन-जन में जगाने के दृष्टिकोण से देश के सभी राज भवनों में अन्य राज्यों का स्थापना दिवस मनाने की परंपरा शुरू की गई है।

मुझे खुशी है कि हमारा राजभवन पिछले एक वर्षों से राज्य दिवस मनाने की स्वस्थ परम्परा का सफलतापूर्वक निर्वहन कर रहा है, जो आगे भी जारी रहेगा।

मेरा मानना है कि सभी राज्यों के बीच ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों में सांस्कृतिक एकता और आपसी समझ को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही यह राष्ट्र की संघीय ढांचे को भी मजबूती प्रदान करेगा। यह अभियान देश की विभिन्न संस्कृतियों और परम्पराओं को पहचानने और उजागर करने में भी मदद करेगा।

अंत में मैं पुनः हिमाचल दिवस की हार्दिक बधाई देता हूं और राज्य की सुख-समृद्धि और विकास के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

धन्यवाद।

जय हिन्द।